समावर्तन

२०१२

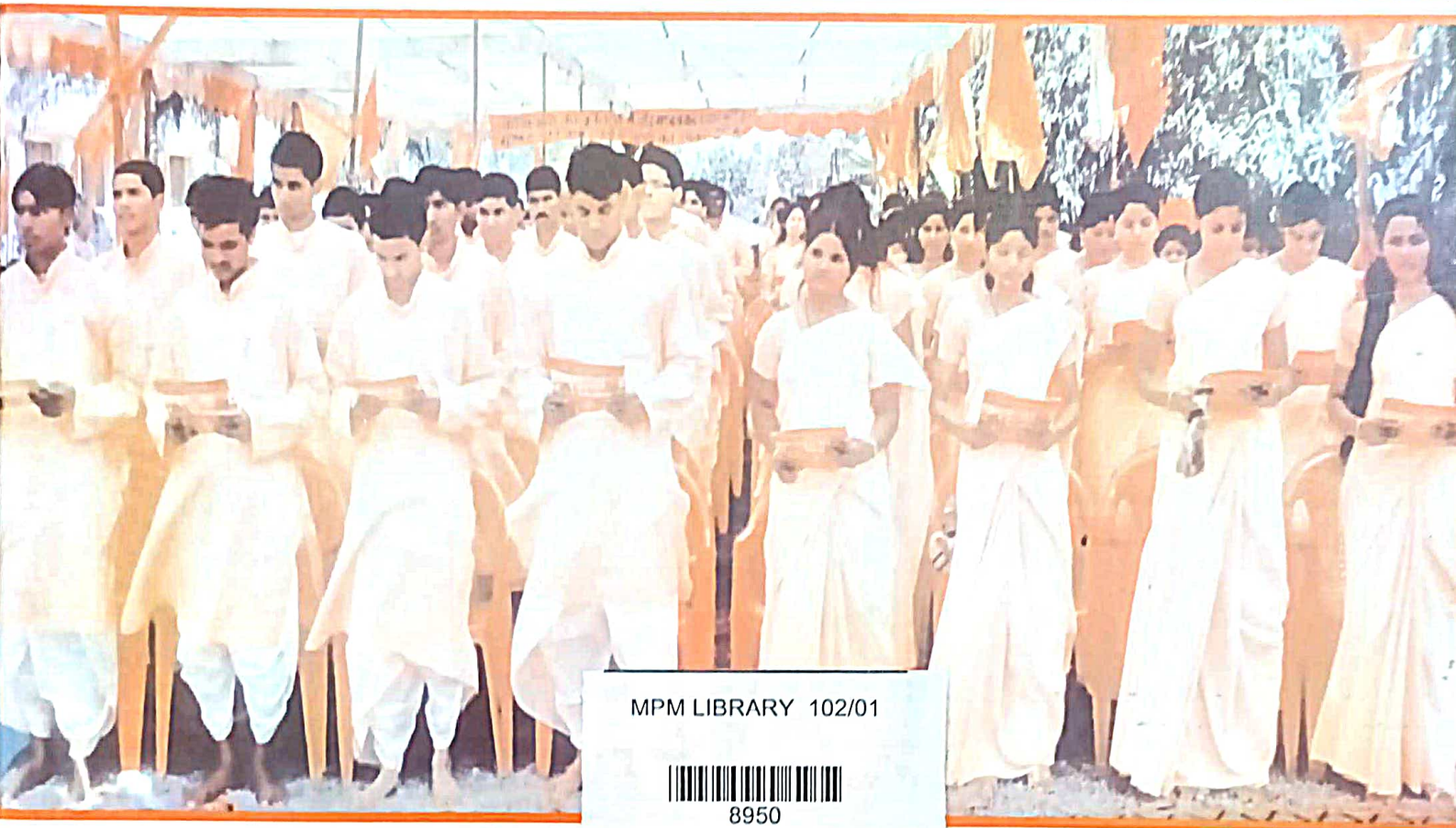

MPM LIBRARY 102/01

8950

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

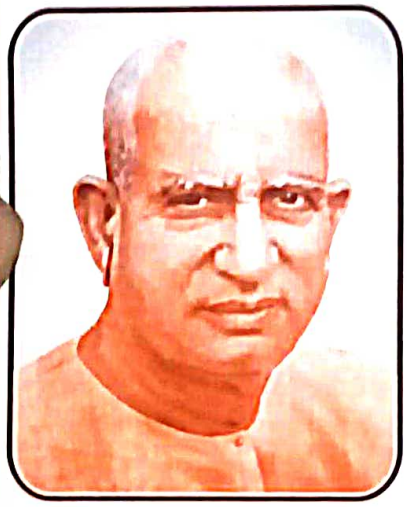

हमारे आदर्श

स्वदेश, स्वधर्म, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिये सर्वस्व निछावर करने वाले राष्ट्रनायक परमवीर महाराणा प्रताप का उज्ज्वल प्रदीप्त चरित्र हमारा आदर्श है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम के श्रीमुख से निःसृत-

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

और पुण्य प्रताप महाराणा प्रताप का यह उद्‌घोष कि-

'जो हटि राखे धर्म को तिहि राखे करतार'

हमारे ... ट्रनायक महाराणा प्रताप के नाम ... ओं में अध्ययन-अध्यापन करने ... के साथ-साथ अपने देश और

... त्त माध्यम स्वीकार करते हुए ... छड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश के केन्द्र ... शिक्षण संस्थाओं को संचालित ... क्षेत्र में अविस्मरणीय भूमिका ... त दो दर्जन से भी अधिक ... ज्य, साहित्य और प्राविधिक वि ... शिक्षा ले रहे हैं।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर (उ.प्र.) 273014
ग्रन्थालय
परिग्रहण सं. 0930
आह्वान सं.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संस्थापक

अपने वरेण्य गुरुदेव युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के बहुआयामी सपनों को साकार करने में निरन्तर संलग्न सामाजिक समरसता के उद्‌गाता, राष्ट्रवादी राजनीति के पुरोधा और अप्रतिम धर्मयोद्धा वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर श्री महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सन् १६३२ ई० में गुरुदेव द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' को अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध, समुन्नत और प्रगतिशील रखते हुए १६५७-५८ ई० में गोरखपुर में वर्तमान विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये उदारतापूर्वक विलीनीकृत तत्कालीन महाराणा प्रताप महाविद्यालय को नये रंग रूप में पुनर्जीवित करते हुये उच्च शिक्षा से वंचित ग्रामीण अंचल जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना की जिसने शैक्षणिक गुणवत्ता, संस्कारयुक्त एवं अनुशासित परिसर की स्थापना कर अपनी बेहतरीन साख बनायी है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

भारत के स्वाधीनता संग्राम में बाल गंगाधर तिलक का युग समाप्त होते-होते कांग्रेस के नेतृत्व पर प्रश्न चिह्न खड़ा होने लगा था। १९२०ई० के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अलग राह पकड़ी और १९३०-३१ई०तक आते-आते कांग्रेस के स्पष्ट सहयोग के अभाव में क्रान्तिकारियों का दमन करने में ब्रिटिश हुकूमत सफल रही। १९१५-१९ई० के बाद के इसी काल खण्ड में स्वाधीनता संग्राम की अगुवा कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की भी शिकार हुई। इस युग तक अंग्रेजों द्वारा भारत में अंग्रेजियत में रमे बाबुओं की फौज खड़ी करने की शिक्षा नीति का प्रभाव भी दिखने लगा था। देश के समक्ष एक चुनौती थी कि भारत की नयी पीढ़ी भारतीयता के साँचे में कैसे ढले। अपनी संस्कृति और स्वदेशी दृष्टि से शिक्षा प्रणाली और शिक्षा नीति ही एक मात्र इस चुनौती का समाधान था। इस चुनौती को भी भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया।

महामना मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयास से ४ फरवरी १९१६ ई० को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लोकार्पित हो गया। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित यह विश्वविद्यालय पूरे देश में भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा पद्धति का एक नया मानक बना और इसी धारा को तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने आगे बढ़ाते हुए १९३२ ई० में गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। ब्रिटिश हुकूमत को शिक्षा के भी क्षेत्र में भारतीय मनीषियों द्वारा यह कड़ी चुनौती थी कि भारत अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ है, वह अपना तंत्र, अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति और अपने जीवन मूल्यों की पुनः स्थापना अपनी योजनानुसार करेगा। यह दूरदृष्टि थी कि देश जब आजाद होगा तब तक देश की व्यवस्था चलाने हेतु भारतीय पद्धति के शिक्षा संस्थानों से निकले युवाओं की फौज तैयार मिलेगी।

देश पराधीन था। जनता विपन्न थी। ज्ञान कौशन के अभाव में स्वाभिमान और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चेतना का जागरण दुष्कर था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज अपनी संकल्प शक्ति के बल पर आजादी की लड़ाई के एक प्रमुख शस्त्र के रूप में शैक्षिक क्रान्ति के पथ पर भी आगे बढ़े। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत १९३२ ई० में बक्शीपुर में किराये के एक मकान में महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्कूल प्रारम्भ हुआ। १९३५ ई० में इसे जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिल गयी और १९३६ ई० में यहाँ हाईस्कूल की पढ़ाई प्रारम्भ की गयी तथा इसका नाम 'महाराणा प्रताप हाई स्कूल' हो गया। इसी बीच महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के अथक प्रयास से गोरखपुर के सिविल लाइन्स में पाँच एकड़ भूमि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को प्राप्त हो गयी और महाराणा प्रताप हाईस्कूल का केन्द्र सिविल लाइन्स हो गया तथा देश के आजाद होते समय यह विद्यालय महाराणा प्रताप इन्टरमीडिएट कालेज के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

१९४९-५० ई० में इसी परिसर में महाराणा प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का अगला पड़ाव था। अगस्त १९५८ में महन्त जी ने महाराणा प्रताप डिग्री कालेज को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु समर्पित किया और विश्वविद्यालय की स्थापना के आधार स्तम्भ बने। वर्तमान गोरखपुर विश्वविद्यालय का वाणिज्य संकाय आज भी उसी महाराणा प्रताप डिग्री कालेज भवन में चल रहा है तथा उसी परिसर में विश्वविद्यालय का एम.बी.ए., शिक्षा शास्त्र एवं वाणिज्य संकाय का नवीन भवन भी स्थित है। तत्पश्चात् महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नाम से वर्तमान दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की, सम्प्रति यह विश्वविद्यालय परिसर से सटे महानगर का एक अति प्रतिष्ठित महाविद्यालय है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्तमान में दर्जनों शिक्षण संस्थाएँ गोरखपुर क्षेत्र में संचालित हो रही है। इनमें गोरखपुर में महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गुरु श्री गोरक्षनाथ स्कूल ऑफ नर्सिंग गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार एवं बालिका विद्यालय सिविल लाइन्स, दिग्विजयनाथ बी.एड. कालेज, महाराणा प्रताप टेलरिंग कालेज सिविल लाइन्स, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार जू०हा० स्कूल रामदत्तपुर, महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय रामदत्तपुर, महाराणा प्रताप कृषक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जंगल धूसड़, दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक विद्यालय, चौक माफी और महाराणा प्रताप सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, बेतियाहाता, गोरखपुर प्रमुख हैं। महराजगंज जनपद में दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज, चौक बाजार, दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक बालिका विद्यालय, चौक बाजार, दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार, चौक बाजार प्रमुख प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाएं हैं। महराजगंज जनपद के चौक बाजार में सबसे नवीन संस्था गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय इस वर्ष अपना प्रथम सत्र पूरा करने जा रहा है। महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़ इसी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित है।

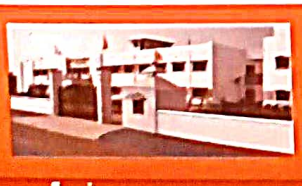

गोरक्षपीठाधीश्वर

॥ ओऽम् नमो भगवते गोरक्षनाथाय ॥

☎ (०५५१)
२२५५४५३
२२५५४५४

श्री गोरखनाथ मन्दिर

शुभाशीष

१९३२ ई० में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना गुरूदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के प्रसार हेतु किया था। उन्होंने अपने द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त के आग्रह पर गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु भूमि-भवन एवं अध्यापक-छात्र सहित सरकार को दे दिया। सम्प्रति गोरखपुर विश्वविद्यालय की नींव पड़ी। उसी स्मृति को पुनर्जीवित करते हुए जंगल धूसड़ में 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' की स्थापना की गई।

यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिमान बनकर उभरा है। गत सत्र से महाविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर कक्षाओं का संचालन बढ़ते कदम का परिचायक है। हमे प्रसन्नता है कि महाविद्यालय का पाँचवाँ बैच स्नातक की शिक्षा तथा पहला बैच स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी कर अपने जीवन के अगले सोपान पर कदम रखने के लिए तैयार है। 'समावर्तन संस्कार' के साथ उन्हें महाविद्यालय परिवार 'विदा' करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्ययन के दौरान यहाँ के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ जो सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन की भी शिक्षा एवं प्रेरणा मिली है, उससे उनका मार्ग प्रशस्त होगा। राष्ट्र और समाज को एक योग्य पीढ़ी प्राप्त होगी। मेरा सभी छात्र-छात्राओं को शुभाशीष एवं इस आयोजन के प्रति हार्दिक शुभकामना।

शुभेच्छु

(महन्त अवेद्यनाथ)
सचिव/ मंत्री, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
अध्यक्ष-प्रबन्ध समिति,
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

Dr. BHOLENDRA SINGH
M.Com. Ph.D.
Ex. - Vice Chancellor
Poorvanchal University
Jaunpur

☎ : (051) - 2256934
Residence :-
A-64, Surajkund Colony
Gorakhpur-273001

शुभकामना संदेश

गोरक्षपीठ की शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पहल अविस्मरणीय है। १९३२ ई० में ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना के साथ शिक्षण संस्थानों की जो शृंखला खड़ी हुई, उसमें महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ की स्थापना उच्च शिक्षा में बढ़ते कदम का अगला पड़ाव था। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की इच्छा एवं प्रेरणा से स्थापित यह महाविद्यालय सातवाँ वर्ष पूरा करने जा रहा है। इस सत्र में महाविद्यालय से स्नातक शिक्षा प्राप्त कर चुके पाँचवें 'बैच' एवं स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर चुके प्रथम 'बैच' के लिए 'समावर्तन संस्कार' समारोह का आयोजन एक प्रशंसनीय प्रयास है। इस प्रयास की सफलता हेतु मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामना एवं धन्यवाद प्रेषित कर रहा हूँ

भो. सिंह

(भोलेन्द्र सिंह)
पूर्व, कुलपति
अध्यक्ष-महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर

योगी आदित्यनाथ
संसद सदस्य, लोकसभा
भारत
प्रबन्धक,
महाराणा प्रताप महाविद्यालय,
जंगल धूसड़

शुभकामना संदेश

शिक्षा में गुणवत्ता का गिरता स्तर उच्च शिक्षा के समक्ष एक कडी चुनौती बनकर उभरा है। उच्च शिक्षा परिसरों में अराजकता, अपराधियों का बढ़ता प्रभाव, राजनीतिक दलों का सक्रिय हस्तक्षेप और शिक्षा संस्कृति का निरन्तर ह्रास गम्भीर चिंता का विषय है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गुणवत्तायुक्त, युगानुकूल और भारतीय संस्कृति केन्द्रित शिक्षा के प्रसार हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने की थी। उपर्युक्त विषम परिस्थितियों में चुनौती को स्वीकार करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना २००५ ई० में की गयी। शीघ्र ही इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी। पूरे सत्र में १४६ दिन पढ़ाई, ३० जनवरी तक पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेने, सप्ताह में एक दिन की कक्षा छात्र-छात्राओं द्वारा पढ़ाये जाने, सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के साथ महाविद्यालय की प्रतिदिन की दिनचर्या शुरू करने, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा का आयोजन, सप्ताह में एक दिन स्वैच्छिक श्रमदान, विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन जैसे नये-नये प्रयोगों के साथ इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय ख्याति अर्जित की है।

छात्रसंघ की संरचना में नया प्रयोग एवं प्रशासनिक व्यवस्था में छात्र सहभाग की योजना प्रशंसनीय है। यदि ये प्रयोग सफल हुये तो निश्चय ही यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक मानक महाविद्यालय के रूप में जाना जायेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा के साथ संस्कार का प्रयास भी सराहनीय है। 'गाउन' के स्थान पर भारतीय वेश-भूषा में 'समावर्तन संस्कार' समारोह का आयोजन भी शिक्षा परिसर में भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना का महत्वपूर्ण प्रयास है। 'समावर्तन संस्कार' समारोह की सफलता एवं वर्तमान सत्र में स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा पूर्ण कर अपनी जीवन यात्रा के पथ पर निरन्तर अग्रसर विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मेरी हार्दिक शुभकामना।

(योगी आदित्यनाथ)
सह सचिव, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
मंत्री-प्रबन्ध समिति,
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

प्रो० यू० पी० सिंह
पूर्व कुलपति
वीर बहादुर सिंह
पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर, उ.प्र.

शुभकामना संदेश

गोरक्षापीठ के पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने १९३२ ई० में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की। शिक्षा के प्रसार को लोक जागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत प्राथमिक से लेकर उच्च एवं प्राविधिक शिक्षण संस्थानों की शृंखला खड़ी की। तत्पश्चात् गोरक्षापीठाधीश्वर पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की देख-रेख में शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा स्थापित तत्कालीन महाराणा प्रताप डिग्री कालेज में १९५५ से १९५८ ई० तक कार्य करने का सुअवसर मिला। महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ की स्थापना शिक्षा परिषद् के इसी बढ़ते क्रम में हुई।

अपने अल्प समय में ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस महाविद्यालय को पर्याप्त यश मिला है। नित नये प्रयोगों, अनुशासन, गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के कारण यह महाविद्यालय प्रशंसित हुआ है। हमें विश्वास है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय भारतीय संस्कृति के विकास का प्रयास जारी रखेगा। महाविद्यालय के पंचम 'समावर्तन संस्कार' समारोह के आयोजन पर महाविद्यालय परिवार को हमारी हार्दिक शुभकामना।

यू० पी० सिंह

(यू.पी. सिंह)
उपाध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
उपाध्यक्ष-प्रबन्ध समिति,
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

मुख्य अतिथि

आशीष
अध्यक्ष
दिव्य प्रेम सेवा मिशन
हरिद्वार

शुभकामना संदेश

गोरक्षपीठ द्वारा स्थापित पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सर्वाधिक अग्रणी एवं प्रतिष्ठित संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित जंगलधूषण मे स्थित महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय देश के प्रतिष्ठित कुछ उच्च शिक्षण संस्थानो में एक है, जहाँ पाठ्यक्रमों के साथ-साथ राष्ट्रभक्ति एवं समाज सेवा का पाठ पढ़ाया जाता है। गोरखपुर से मेरा निकट का सम्बन्ध है। गोरखपुर मैं आता-जाता रहता हूँ। मैंने यहाँ के लोगो का मानस पढ़ा है। मैं यह जानता हूँ कि इस क्षेत्र के लोगो के बीच महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ गोरखपुर एक 'प्रतिमान' महाविद्यालय के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुका है। यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा की एक ऐसी प्रयोगशाला है जहाँ अध्ययन-अध्यापन के नित-नूतन प्रयोग के साथ न केवल विद्यार्थी गढ़े जाते हैं अपितु यह आदर्श शिक्षकों की नर्सरी भी है। महाविद्यालय प्रशासन में छात्र-सहभाग, शिक्षकों का विद्यार्थियो द्वारा मूल्यांकन तथा विद्यार्थियो द्वारा कक्षाध्यापन का प्रयोग उच्च शिक्षा में निःसन्देह नये प्रतिमानो की स्थापना का सफल प्रयास ही हैं।

आत्म विस्मृति की शिकार भारतीय शिक्षा जगत में 'गाउन' की जगह भारतीय परिधान में 'समावर्तन संस्कार' का आयोजन हिन्दू संस्कृति के जीवन-मूल्यों का युवा पीढ़ी को संदेश देने का एक अभिनव प्रयास है। महाविद्यालय परिवार को समावर्तन संस्कार समारोह के आयोजन एवं विद्यार्थियों के सफलतम जीवन की हार्दिक शुभकामना।

आशीष

१० फरवरी, हरिद्वार

(आशीष)
अध्यक्ष
दिव्य प्रेम सेवा मिशन
हरिद्वार

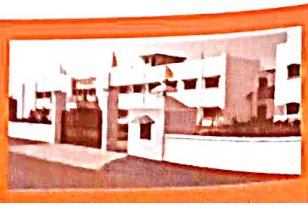

मुख्य अतिथि

श्री आशीष गौतम

उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जनपद में स्थित निवादा ग्राम में २२ अक्टूबर १९६३ ईस्वी को भारत माता की गोद में आये श्री आशीष गौतम वर्तमान देश के कुछ उन गिन-चुने नौजवानों में एक हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत माता की चरणों में समर्पित कर दिया है। ४८ वर्षीय अविवाहित आशीष गौतम की प्रारम्भिक शिक्षा उनके गाँव के सरकारी विद्यालय से हुयी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर एवं विधि की शिक्षा प्राप्त करते समय ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। उनकी स्वाभाविक प्रवृति ने जीवन-दान का संकल्प किया और वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक बन गये। किन्तु हिन्दू संस्कृति को समर्पित उनके मन को चैन नहीं मिला। स्वामी विवेकानन्द को आदर्श मानकर हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की पुर्नप्रतिष्ठा का प्रश्न उन्हें बार-बार बेचैन करता रहा। सम्भवतः जीवन की प्रासंगिकता और आत्मा-परमात्मा के गूढ़ सम्बन्धों को समझने में उनका मन आध्यात्म और सेवा की ओर झुकता चला गया। वे मन की शांति की खोज में अज्ञात दिशा की ओर चल पड़े। भगवती गंगा के उद्गम स्थल गंगोत्री में कुछ दिनों के विश्राम, चिन्तन-मनन, अध्ययन एवं स्वामी विवेकानन्द को पढ़ते-समझते उन्होंने 'असाध्य' नामक पुस्तक लिखी और स्वामी विवेकानन्द के उद्घोष- ''पर सेवा के लिए नरक भी भोगना पड़े तो वह अपनी मुक्ति द्वारा अर्जित स्वर्ग से भी उत्तम है, सब पूजाओं में श्रेष्ठ है'', प्राणि मात्र की सेवा को उन्होंने अपने जीवन का मार्गदर्शक मंत्र माना। अपनी पवित्र जलधारा से प्रतिदिन धो-पोंछ कर पालने-पोसने वाली माँ गंगा की गोद में हरिद्वार के चण्डी घाट पर झुग्गी-झोपड़ियों में बसे समाज से बहिष्कृत कुष्ठरोगियों की सेवा तथा उनके बच्चों का ईसाई मिशनरियों द्वारा सेवा के नाम पर धर्मान्तरण-अभियान पूर्णतः रोकने को आशीष जी ने अपने जीवन का मिशन बनाया। हिन्दू धर्म- संस्कृति की रक्षा में उन्होंने 'दिव्य प्रेम सेवा मिशन' नाम से एक दीप प्रज्ज्वलित किया जिससे निर्मित दीपमालाओं का प्रकाश पुञ्ज आज देश-समाज के लिए जीने वाले किसी भी युवा का मार्ग- प्रशस्त करने हेतु प्रामाणिक प्रकाश स्रोत बन चुका है।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन में सेवा कार्य करने वाले युवाओं के साथ मिलकर आशीष जी ने कुष्ठरोगियों की सेवा-उपचार के लिए निःशुल्क चिकित्सालय तथा उनके बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय की स्थापना की। उन्होंने भारत माता के अपने इन बच्चों को अपने ही राष्ट्र-समाज विरोधी गतिविधियों को संचालित करने वालो का हमराही बनने से रोका है। मानवता का सन्देश देने वाले सेवा-धर्म के माध्यम से उन्होंने हिन्दू धर्म-संस्कृति की सेवा का जो व्रत धारण किया है वह प्रेरणादायी है।

यद्यपि भारत माँ की सेवा करने वाला उसका कोई भी 'लाल' किसी पुरस्कार अथवा सम्मान का भूखा नहीं होता तथापि आशीष जी को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने २००३ ई० में सेवा के क्षेत्र में कार्य करने वाले युवाओं के लिए घोषित 'यशवन्तराव केलकर युवा पुरस्कार' प्रदान किया गया। वर्ष २००६ ई० में मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय महात्मा गाँधी सम्मान, स्वामी विवेकानन्द राष्ट्रीय सम्मान, सन् २०१० ई० में विवेकानन्द सेवा सम्मान,, पंचदस भाऊराव देवरस सेवा सम्मान, गुरू हनुमान मानव सेवा रत्न सम्मान, सन् २०११ ई० में समाज रत्न सम्मान, भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान, वन्देमातरम् राष्ट्रीय अलंकरण सम्मान, स्वामी राम मानवता पुरस्कार से सम्मानित किये जा चुके आशीष जी की भारत माता की सेवा का अनवरत् व्रत जारी है। ऐसे युवा तपस्वी एवं कर्मयोगी का जीवन महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय परिवार के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रेरणादायी है।

दो शब्द ...

गोरक्षपीठ द्वारा संचालित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् जैसे वटवृक्ष की एक छोटी सी शाखा के रूप में गोरखपुर महानगर के पूर्वी-उत्तरी छोर पर ग्रामीण परिवेश में स्थित महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपनी यात्रा के सात वर्ष पूर्ण कर रहा है। महाविद्यालय का पाँचवाँ बैच स्नातक शिक्षा तथा पहला बैच स्नातकोत्तर शिक्षा पूर्ण कर इस वर्ष विश्वविद्यालयी परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी जीवन यात्रा के अगले पड़ाव पर जाने हेतु तैयार है। भारत के लगभग सवा अरब लोगों में स्नातक-स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त ३०६ अब और ऐसे नागरिक होंगे जिनकी जीवन-दृष्टि की रचना में हमारे महाविद्यालय का भी किंचित योगदान है। हमारे इन विद्यार्थियों के जीवन के तीन वर्ष का एक चौथाई समय हमारे महाविद्यालय परिसर में गुजरा है। महाविद्यालय परिसर में बीते इन क्षणों का हमारे इन विद्यार्थियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा यह तो समय बतायेगा और वही हमारी उपलब्धि होगी।

आज का समावर्तन संस्कार समारोह इस बात का सूचक है कि हम अपने विद्यार्थियों का एक योग्य नागरिक के रूप में कैसा विकास चाहते हैं। वर्तमान में भारत की शिक्षित युवा पीढ़ी का अधिकांश हिस्सा भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति के आकर्षण के दिवा स्वप्न में डूबा हुआ है। सत्तावादी भारतीय राजनीति ने भारतीय धर्म-संस्कृति को साम्प्रदायिकता का चोला पहनाकर उसके वास्तविक स्वरूप पर भ्रम का आवरण चढ़ा दिया है। परिणामतः सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की डोर कमजोर हुई है। परिवार संस्था भी कमजोर हो रही है। गाँव वीरान होते जा रहे हैं। महानगरीकरण के रूप में असन्तुलित विकास का भयावह चित्र सामने है। भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अपराध का बढ़ता ग्राफ प्रभावहीन होते भारतीय जीवन-मूल्य के ही सूचक हैं।

किसी भी राष्ट्र का वर्तमान और भविष्य उस देश की शिक्षा प्रणाली और उसके स्वरूप पर निर्भर करता है। डी.एस. कोठारी इसी बात को कह रहे थे कि भारत का भविष्य कक्षाओं में पलता है। किन्तु भारत का दुर्भाग्य है कि आजादी के साढ़े छः दशक बाद भी हम मैकाले के भूत से शिक्षा को आजाद नहीं करा पाये। मैकाले द्वारा प्रतिष्ठित शिक्षा नीति आज तक प्रभावी है और उसके उद्देश्य-'पाश्चात्य शिक्षा व विचारों के प्रभाव से ऐसे भारतीय पैदा करना जो बौद्धिक दृष्टि से गुलाम हों'-को पूरा करने में ही लगी हुई है। 'धर्मनिरपेक्षता' और 'समाजवाद' के नाम पर भारत की सत्ता देश की युवा पीढ़ी को गुमराह करने वाली शिक्षा पद्धति की ही प्रतिष्ठापक है। किन्तु मैकाले की शिक्षा नीति और स्वतन्त्र भारत के सत्ताधीशों द्वारा शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की अर्थी सजाने पर छाती पीटते रहने से क्या होने वाला है? हम अपने प्रयासों से, जितना सम्भव है उनके प्रयासों को, कुछ शिक्षण संस्थानों में ही सही निष्फल कर सकते हैं और भारतीय संस्कृति एवं जीवन-मूल्य के प्रति थोड़े ही समूह में सही, युवाओं में आत्म सम्मान जागृत कर सकते हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना परतन्त्र भारत में (१९३२ ई.) गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने उपर्युक्त उद्देश्यों से ही की थी। भारतीय संस्कृति और उसके जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति भारत की युवा पीढ़ी को आकर्षित करने के प्रयास के साथ प्रतिष्ठित एवं विकसित होता हुआ महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं उनकी यशस्वी परम्परा के सपनों को पूरा करने में कहाँ तक सफल है, इसका मूल्यांकन गोरक्षपीठ और समाज करेगा। तथापि 'समावर्तन संस्कार समारोह' हमारे वैचारिक अधिष्ठान का ही हिस्सा है। हिन्दू जीवन दर्शन के षोडश संस्कारों में 'समावर्तन संस्कार' का मानव जीवन के संस्कारों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज के अवसर पर अपने विद्यार्थियों के यशस्वी जीवन की हार्दिक शुभकामना। मुझे विश्वास है कि हमारे विद्यार्थियों की जीवनयात्रा में महाविद्यालय परिसर का अल्पकालिक यथार्थ किसी न किसी रूप में अवश्य झलकता रहेगा।

फाल्गुन शुक्ल, ४, विक्रम संवत् २०६८
(२६ फरवरी, २०१२ ई.)

(प्रदीप कुमार राव)
प्राचार्य

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम (सत्र : २०११-१२)

महाविद्यालय में वृक्षारोपण :

६ जुलाई ,२०११ को महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डा० प्रदीप कुमार राव द्वारा सागौन, आम, अमरूद, पीपल एवं जामुन के ५ पौधों को लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एवं स्वयं सेवकों के द्वारा २०० पौधों का रोपण किया गया।

महाविद्यालय में वृक्षारोपण

देश विभाजन की पूर्व संध्या पर आयोजित व्याख्यान

सत्रारम्भ :

शैक्षिक पञ्चांग के अनुसार १६ जुलाई से स्नातक स्तर पर कला, विज्ञान एवं वाणिज्य भाग दो एवं तीन तथा स्नातकोत्तर स्तर पर रसायन एवं प्राचीन इतिहास अन्तिम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ की गयी। १ अगस्त से स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर भाग एक की कक्षाएं प्रारम्भ हुई।

नवागन्तुक स्वागत समारोह :

एक अगस्त को प्रथम वर्ष में प्रवेश लिये सभी छात्र-छात्राओं के स्वागत हेतु द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया गया। स्वागत समारोह में रैगिंग जैसी अमानवीय कृत्यों से विगत वर्षों की भाँति परिसर वातावरण को अक्षुण्ण बनाये रखने का संकल्प लिया गया।

देश विभाजन की पूर्व संध्या पर समारोह :

देश विभाजन की पूर्व संध्या पर आयोजित होने वाला कार्यक्रम १३ अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी होने के कारण १२ अगस्त को आयोजित किया गया। इस वर्ष का विषय "भारत विभाजन के विष बीज एवं भारतीय युवा" था। जिसके मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित इतिहासकार डॉ० महेन्द्र प्रताप सिंह थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया। संचालन छात्रसंघ प्रभारी एवं अर्थशास्त्र विभाग के प्रवक्ता श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय ने किया।

स्वतन्त्रता दिवस समारोह :

स्वतन्त्रता दिवस का राष्ट्रीय पर्व १५ अगस्त को महाविद्यालय

स्वतन्त्रता दिवस समारोह

में उत्साह पूर्वक ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के साथ मनाया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत देश प्रेम से ओत-प्रोत प्रस्तुतियाँ एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित कार्यक्रमों के पश्चात् वन्देमातरम् के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

श्रमदान करते प्राचार्य, प्राध्यापक एवं छात्राएं

ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान-माला :

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की स्मृति में साप्ताहिक व्याख्यान-माला प्रतिवर्ष की भाँति २३ अगस्त से २९ अगस्त तक आयोजित की गयी। २३ अगस्त को इस साप्ताहिक व्याख्यान-माला के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० शैलेन्द्र नाथ कपूर, कार्यक्रम के अध्यक्ष वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० उदय प्रताप सिंह तथा मुख्य वक्ता अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वान प्रो० शिवाजी सिंह रहे। कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के प्रवक्ता श्री सुबोध मिश्र तथा आभार भौतिकी प्रवक्ता श्री सन्तोष कुमार ने किया।

व्याख्यान-माला के उदघाट्न सत्र में अतिथि

२४ अगस्त :

साप्ताहिक व्याख्यान-माला के दूसरे दिन "राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत चुनौतियाँ" विषय पर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के उपाचार्य डॉ० हर्ष सिन्हा ने अपना शोधपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० शुभ्रांशु शेखर सिंह तथा आभार अर्थशास्त्र के प्रवक्ता श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय ने किया।

२५ अगस्त :

व्याख्यान-माला के तीसरे दिन "भ्रष्टाचार निवारण के कुछ गैरकानूनी उपाय" विषय पर बतौर मुख्य वक्ता किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेवरही कुर्शीनगर के पूर्व प्राचार्य एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय ने अपना विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रसंघ उपाध्यक्ष श्री विश्वजीत शर्मा तथा आभार वाणिज्य विभाग के प्रभारी डॉ० राजेश शुक्ल ने किया।

२६ अगस्त :

व्याख्यान-माला के चौथे दिन "विकास की भारतीय

श्रमदान करते छात्र

व्याख्यान–माला के समापन समारोह में अतिथि

अवधारणा'' विषय पर बुद्ध पी० जी० कालेज कुशीनगर के अर्थशास्त्र विभाग के प्रभारी डॉ० सतीश द्विवेदी ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान का संचालन छात्रसंघ उपाध्यक्ष राकेश सिंह तथा आभार ज्ञापन वाणिज्य विभाग के प्रवक्ता डॉ० नन्दन शर्मा ने किया।

२७ अगस्त :

व्याख्यान-माला के पाँचवे दिन दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के राजनीतिशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो० श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने ''भारतीय विदेश नीति की चुनौतियाँ'' विषय पर अपना शोध पूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रवक्ता डॉ० ब्रजेश मिश्र तथा स्वागत एवं आभार ज्ञापन रसायनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ० बी० बी० मिश्र ने किया।

२८ अगस्त :

व्याख्यान-माला के छठवें दिन मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज के भौतिकविद डॉ० सत्यपाल सिंह ने ''तारों का जन्म एवं मृत्यु'' विषय पर रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन बी.एस-सी. तृतीय वर्ष के छात्र श्री मनीष त्रिपाठी तथा स्वागत एवं आभार ज्ञापन मनोविज्ञान विभाग के प्रभारी डॉ० सुनील कुमार मिश्र ने किया।

छात्रसंघ साधारण सभा की बैठक

२९ अगस्त

व्याख्यान-माला के समारोप के अवसर पर ''रामजन्म भूमि एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन'' विषय पर ख्यातिलब्ध इतिहासकार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० टी० पी० वर्मा ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास विभाग के आचार्य प्रो० माता प्रसाद त्रिपाठी ने की। कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव तथा संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के प्रवक्ता श्री लोकेश कुमार प्रजापति ने किया।

छात्रसंघ चुनाव पश्चात् उल्लास में विद्यार्थी

छात्रसंघ चुनाव :

३ सितम्बर को महाविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव सम्पन्न हुआ। योग्यता एवं उपस्थिति के आधार पर छात्रसंघ प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ, जिनमें से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं महामन्त्री का निर्वाचन

महाविद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा मतदान करके किया गया। अध्यक्ष पद पर श्री विश्वजीत शर्मा, उपाध्यक्ष पद पर श्री राकेश सिंह एवं महामंत्री पद पर श्री राकेश कुमार गौर्य का चुनाव हुआ। समस्त चुनावी प्रक्रिया छात्रसंघ प्रभारी श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय की देख-रेख में सम्पन्न हुई।

शिक्षक दिवस :

महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने कक्षाएं पढ़ा कर शिक्षक दिवस मनाया। छात्रसंघ भी इस उपक्रम में पूर्णतः भागीदार बना।

हिन्दी दिवस पर मु. अतिथि श्री रणविजय सिंह

हिन्दी दिवस :

१४ सितम्बर को महाविद्यालय में समारोह पूर्वक हिन्दी दिवस मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक एवं साहित्यकार श्री रणविजय सिंह तथा अध्यक्ष सतीश चन्द पी०जी० कालेज के हिन्दी विभाग के अवकाश प्राप्त आचार्य डा० आद्या प्रसाद द्विवेदी थे। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग की प्रवक्ता डॉ० आरती सिंह ने दिया।

विमर्श – 2011 का विमोचन करते पूज्य सन्तगण

संगोष्ठी :

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि के साप्ताहिक समारोह के अन्तर्गत चतुर्थ दिन "छुआ-छूत राष्ट्रीय एकता में बाधक" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के सानिध्य में अयोध्या के श्री महन्त पूज्य नृत्य गोपालदास जी महाराज का प्रभावपूर्ण व्याख्यान हुआ। योगी आदित्यनाथ जी महाराज के मार्गदर्शन में यह संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का आयोजन गोरक्षनाथ मन्दिर के सभागार में हुआ।

ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ श्रद्धांजलि समारोह :

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी की पुण्यतिथि समारोह में महाविद्यालय परिवार ने गोरखनाथ मन्दिर के सभागार में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में सम्मिलित होकर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इसी समारोह में महाविद्यालय की वार्षिक शोध-पत्रिका "विमर्श २०११" का विमोचन किया गया।

विशिष्ट व्याख्यान :

एक अक्टूबर को बुद्ध पी०जी० कालेज कुशीनगर के रसायन

व्याख्यान देते हुए डॉ० वाई.पी. कोहली

2 अक्टूबर : शिक्षक अभिभावक सम्मेलन

शास्त्र के उपाचार्य डा० वाई०पी०कोहली ने "विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का योगदान" विषय पर शोधपूर्ण व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान महाविद्यालय के विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता डा०बी०बी०मिश्रा एवं आभार ज्ञापन डॉ० शालिनी सिंह द्वारा किया गया।

शिक्षक-अभिभावक सम्मेलन :

दो अक्टूबर को महाविद्यालय में शिक्षक अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में श्री त्रियुगी नारायण मिश्र अभिभावक संघ के अध्यक्ष, श्री विजय कुमार साहनी एवं श्री महेश सैनी उपाध्यक्ष एवं डॉ० आरती सिंह सचिव निर्वाचित किये गये। सदस्य के रूप में श्री अजय प्रताप मौर्य, श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह, सुश्री अनामिका यादव, श्री गोपाल कुमार वर्मा, श्री डी०के० त्रिपाठी, सुश्री छाया कुमारी, श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव व श्री संदीप पाण्डेय चुने गये।

शिक्षक संघ गठन :

तीन अक्टूबर को महाविद्यालय की संस्थापना के पश्चात् पहली वार शिक्षक संघ का चुनाव हुआ। जिसमें डॉ० विजय कुमार चौधरी अध्यक्ष, डॉ० अविनाश प्रताप सिंह उपाध्यक्ष, श्री श्रीकांत मणि त्रिपाठी महासचिव एवं डॉ० राजेश शुक्ल कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। सभी पदाधिकारियों का चुनाव निर्विरोध हुआ। संघ के कार्यकारिणी सदस्य के रूप में श्रीमती कविता मन्ध्यान, श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय, श्री सुभाष कुमार गुप्त, श्री अनिल कुमार वर्मा एवं डॉ० कमलेश सिंह यादव चुने गये।

व्याख्यान देते डॉ0 आनन्द शंकर सिंह

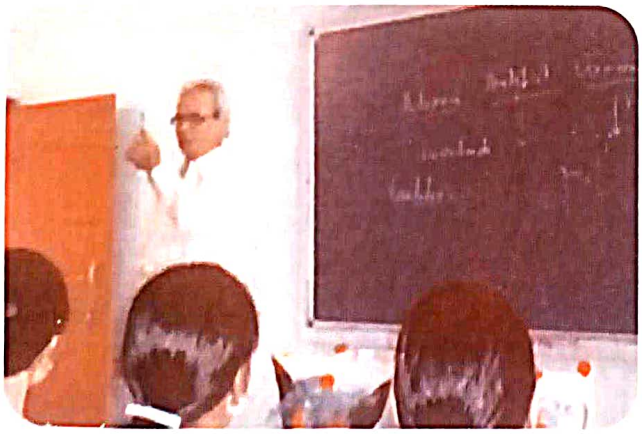

व्याख्यान देते प्रो. आर.सी. श्रीवास्तव

विशिष्ट व्याख्यान :

१५ अक्टूबर को ईश्वर शरण डिग्री कालेज, इलाहाबाद के प्राचार्य वरिष्ठ इतिहासकार डॉ० आनन्द शंकर सिंह ने "दलित आन्दोलन के विविध आयाम" विषय पर अपना शोधपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने आभार ज्ञापन किया।

विशिष्ट व्याख्यान :

१६ अक्टूबर को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में गणित के आचार्य प्रो० आर०सी०श्रीवास्तव ने "गणित के क्षेत्र में

भारत की देन'' विषय पर व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान महाविद्यालय के गणित विभाग द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी एवं आभार श्री आकाश कुमार द्वारा किया गया।

व्याख्यान देते प्रो. डी.के. सिंह

विशिष्ट व्याख्यान :

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राणि विज्ञान विभाग के आचार्य डॉ० डी०के० सिंह ने १८ अक्टूबर को विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान के अन्तर्गत ''स्टेम सेल'' विषय पर शोध पूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी तथा आभार श्री सत्य प्रकाश सिंह ने किया।

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम :

२० अक्टूबर को महाविद्यालय में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन में उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री एस.एस. श्रीवास्तव, जिला पंचायत के अपर आयुक्त श्री जी.के. सिंह, हिन्दुस्तान समाचार पत्र के सह-सम्पादक श्री हर्षवर्धन शाही एवं प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने छात्र-छात्राओं को मतदाता बनने एवं मतदान के लिए प्रेरित किया।

विशिष्ट व्याख्यान :

२१ अक्टूबर को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र विभाग की उपाचार्य डॉ० मीरा यादव ने ''मार्लीकुलर सिमेट्री'' विषय पर महाविद्यालय के रसायनशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० कमलेश सिंह यादव एवं आभार डॉ० शिव कुमार वर्नवाल ने किया।

विशिष्ट व्याख्यान :

२१ अक्टूबर को महाविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा ''अपवाह प्रणाली'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के भूगोल विभाग के उपाचार्य एवं शिक्षक संघ महामंत्री डॉ० शिवाकान्त सिंह थे। व्याख्यान के अन्त में डॉ० प्रवीन्द्र कुमार शाही द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

१६ फरवरी : शिक्षक-अभिभावक बैठक

सम्बोधित करते डॉ० अवधेश अग्रवाल

विशिष्ट व्याख्यान :

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा २१ अक्टूबर को आयोजित व्याख्यान में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के उपाचार्य डॉ० विनोद कुमार सिंह ने "नाभिकीय प्रसार निःशस्त्रीकरण : भारतीय परिप्रेक्ष्य में" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० शुभ्रांशु शेखर सिंह एवं आभार ज्ञापन डॉ० सुनील कुमार मिश्र ने किया।

विशिष्ट व्याख्यान :

प्राणि विज्ञान विभाग द्वारा ४ नवम्बर को आयोजित व्याख्यान में "गौमूत्र से रोग निदान" विषय पर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राणि विज्ञान विभाग के प्रवक्ता डॉ० विनय कुमार सिंह ने शोधपूर्ण व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० आर०एन० सिंह ने किया।

व्याख्यान देते डॉ० विनोद कुमार सिंह

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर :

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत तीनों इकाई का संयुक्त प्रथम एक दिवसीय शिविर १० नवम्बर को महाविद्यालय परिसर में आयोजित हुआ। इसके अन्तर्गत स्वयंसेवक/सेविकाओं द्वारा श्रमदान किया गया।

विशिष्ट व्याख्यान एवं स्वैच्छिक रक्तदान शिविर :

रक्तदान को प्रोत्सहान प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में १० नवम्बर को विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के रक्त कोष प्रभारी डॉ० अवधेश अग्रवाल ने "स्वैच्छिक रक्तदान मानव कल्याण का पवित्र साधन" विषय पर अपना व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं स्वयंसेवक/सेविकाओं ने रक्त दान किया।

सप्त दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर :

१२ नवम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वितीय एक दिवसीय शिविर में "इन्सेफेलाइटिस कारण एवं निदान" विषय पर वी०आर०डी० मेडिकल कालेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० राजकिशोर सिंह ने अपना विचार व्यक्त किया। इससे पूर्व परिसर स्थित उत्तरी प्रांगण में स्वयंसेवकों द्वारा श्रमदान किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का सप्त दिवसीय विशेष शिविर :

राष्ट्रीय सेवा योजना की तीनों इकाइयों का संयुक्त सात दिवसीय शिविर १५-२१ नवम्बर तक ग्राम हसनगंज जंगल धूसड़ को

केन्द्र बना कर आयोजित किया गया। जिसमें १४७ स्वयंसेवक/ सेविकाओं ने हिस्सेदारी की। शिविर के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के पूर्व सलाहकार प्रो० प्रभाशंकर पाण्डेय ने की तथा मुख्य अतिथि दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ० शैलेन्द्र प्रताप सिंह थे । कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अविनाश प्रताप सिंह एवं आभार श्री लोकेश कुमार प्रजापति ने किया।

सांस्कृतिक समारोह में छात्राएं

युवा महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर सरस्वती वन्दना

सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन समारोह :

२१ नवम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि किसान पी०जी० कालेज सेवरही, कुशीनगर के पूर्व प्राचार्य डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय तथा विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय के रसायन विभाग के प्रवक्ता डॉ० बी० बी० मिश्र थे। शिविर के समापन अवसर पर स्वयंसेवक/ स्वयंसेविकाओं द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी श्री लोकेश कुमार प्रजापति ने किया। उत्कृष्ट कार्यों के लिये स्वयंसेवकों को पुरस्कृत भी किया गया।

युवा महोत्सव :

१६ नवम्बर से महाविद्यालय में साप्ताहिक युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम यथा मेंहदी, रंगोली, पाककला, छद्मवेश इत्यादि मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

क्रीड़ा समारोह :

१८-१९ नवम्बर को क्रीड़ा समारोह के अन्तर्गत महाविद्यालय के क्रीड़ा प्रांगण में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई, जिसमें कुश्ती, कबड्डी, ऊँची-कूद, लम्बी-कूद, भाला फेंक, गोला फेंक, बालीबाल, कैरम, क्रिकेट इत्यादि प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

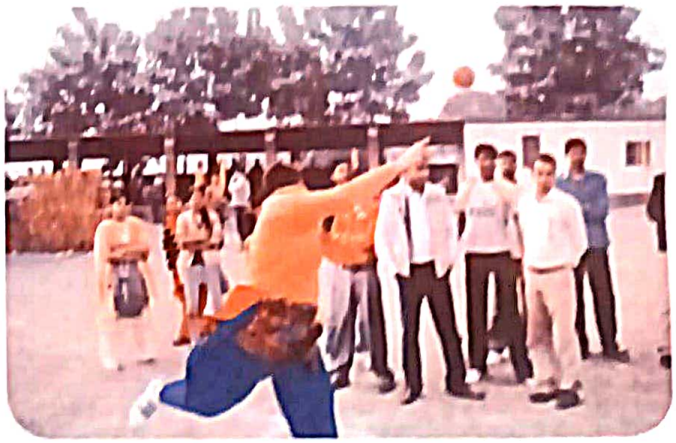

क्रीड़ा समारोह में प्रतिभाग करती छात्रा

शोध-व्याख्यान प्रतियोगिता में व्याख्यान देती छात्रा

शोध-व्याख्यान प्रतियोगिता :

छात्र-छात्राओं के समग्र विकास हेतु प्रतिवर्ष की भाँति १६-१७ नवम्बर को शोध व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे महाविद्यालय के लगभग तीन दर्जन से अधिक छात्र-छात्राओं ने विभिन्न ज्वलन्त एवं प्रासंगिक विषयों यथा 'भारत का अन्तरिक्ष प्रोग्राम', 'आत्महत्या का कारण एवं निवारण', 'वैश्वीकरण का कृषि पर प्रभाव', 'रेडियोएक्टिविटी का कृषि एवं विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग', 'कैंसर का उपचार एवं औषधि', 'कश्मीर समस्या एवं समाधान', 'लघु उद्योगों की समस्याएं', 'संकरण यौगिकों का उपयोग-प्रभाव', 'साक्षात्कार हेतु सुझाव', 'एन्जाइम एवं जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग' इत्यादि विषयों पर अपने शोध व्याख्यान प्रस्तुत किये।

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता :

महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं में अभिव्यक्ति क्षमता के विकास हेतु २५ नवम्बर को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय "चीन की विस्तारवादी नीति एवं भारतीय सुरक्षा" था। विजयी प्रतिभागी पुरस्कृत किये गये।

संस्थापक समारोह की शोभायात्रा में भारत माता

विश्व एड्स दिवस :

एक दिसम्बर को विश्व एड्स दिवस पर राष्ट्रीय सेवा योजना तथा रेड रिबन क्लब के तत्वावधान में एड्स से बचाव हेतु जागरूकता उत्पन्न कराने हेतु एक विशाल रैली निकाली गयी जो महाविद्यालय परिसर से निकल कर लाला बाजार होते हुए भट्ठा चौराहा के रास्ते वापस महाविद्यालय परिसर में सम्पन्न हुई।

पर्यावरण जागरूकता रैली

संस्थापक समारोह :

चार दिसम्बर को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक समारोह के उद्घाटन समारोह में निकाली जाने वाली शोभायात्रा में महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं, प्राध्यापक एवं कर्मचारियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। इस वर्ष विद्यार्थियों द्वारा महंगाई, भ्रष्टाचार और पर्यायवरण जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर मनमोहक झाँकियों का प्रदर्शन

किया गया। महाविद्यालय को शोभायात्रा में सर्वश्रेष्ठ अनुशासन एवं पथ संचलन का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

"आओ राजनीति करें" मंच का गठन :

२० दिसम्बर को महाविद्यालय के छात्रसंघ ने विधान सभा चुनाव में जन-जागरूकता हेतु 'आओ राजनीति करें मंच' का गठन किया। इस मंच ने विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में नवयुवकों को जागरूक करने के उद्देश्य से 'हमारा प्रतिनिधि कैसा हो' विषय पर निरन्तर जन अभियान चलाया।

व्याख्यान देते प्रो. ईश्वर दास

विशिष्ट व्याख्यान :

२१ दिसम्बर को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो० ईश्वर दास ने "रसायनशास्त्र का आदिभूमि भारत" विषय पर अपना शोधपूर्ण व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान महाविद्यालय के रसायनशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ०रामसहाय एवं आभार डॉ० मनीषा कपूर ने किया।

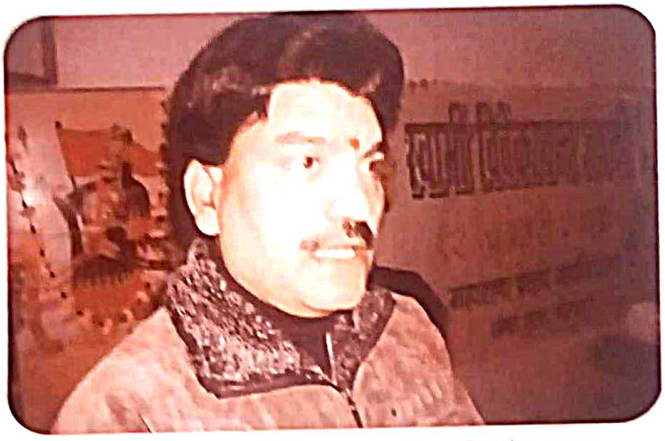

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर प्रो. मुरली मनोहर पाठक

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती :

१२ जनवरी को राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती की पूर्वसन्ध्या के अवसर पर युवा सप्ताह का उद्घाटन करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ० मुरली मनोहर पाठक तथा सतीश चन्द पी० जी० कालेज, बलिया के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी ने अपने विचार व्यक्त किये।

महाराणा प्रताप पुण्य तिथि :

हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप की पुण्य तिथि १९ जनवरी को महाविद्यालय के कार्यक्रम में गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी एवं महाविद्यालय के प्रबन्धक पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा अखिल भारतीय शिक्षण मण्डल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व शिक्षा निदेशक श्री धर्म नारायण अवस्थी द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किये

महाराणा प्रताप पुण्यतिथि समारोह के अवसर पर पूज्य महाराज जी

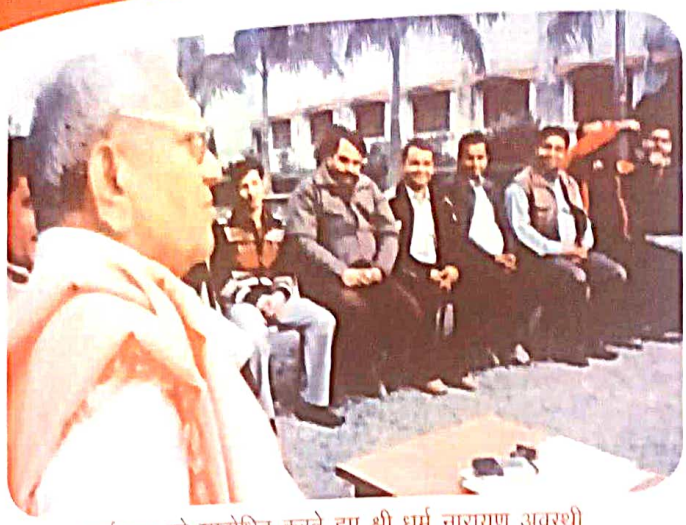

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए श्री धर्म नारायण अवस्थी

गये। विषय प्रवर्तन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राय तथा संचालन अर्थशास्त्र विभाग के प्रभारी श्री पुरुषोत्तम पाण्डेय द्वारा किया गया।

शिक्षक-कार्यशाला :

"शिक्षा नीति एवं शिक्षक की भूमिका" विषय पर महाविद्यालय में २० जनवरी को कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्यवक्ता राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पूर्व निदेशक श्री धर्म नारायण अवस्थी ने कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त किये। महाविद्यालय के सभी शिक्षकों ने इन कार्यशाला में सहभाग किया।

सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती :

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अद्वितीय योद्धा नेताजी की जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के प्रवक्ता डॉ० शुभांशु शेखर सिंह ने अपना विचार व्यक्त किया।

गणतन्त्र दिवस :

गणतन्त्र दिवस पर ध्वजारोहरण एवं राष्ट्रगान के पश्चात् राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास से गणतन्त्र दिवस समारोह मनाया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह

सरस्वती पूजन :

वसन्त पंचमी पर्व पर महाविद्यालय में इस बार प्रथम वर्ष माँ सरस्वती की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा शास्त्रीय विधि द्वारा करके हर्षोल्लासपूर्वक प्राचार्य, शिक्षकगण एवं छात्र/छात्राओं द्वारा ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना की गयी। इस ज्ञान यज्ञ के आयोजन में समस्त छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए।

सरस्वती पूजन में प्राध्यापक एवं छात्र/छात्राएं

छात्रसंघ साधारण-सभा :

प्रतिमाह प्रथम सप्ताह के अन्तिम कार्यदिवस पर छात्रसंघ की साधारण-सभा की बैठक छात्रसंघ अध्यक्ष की अध्यक्षता में सम्पन्न होती है। साधारण-सभा में समस्त विद्यार्थी, प्राध्यापक एवं प्राचार्य उपस्थित होते हैं। इस सभा में कोई भी विद्यार्थी अपनी समस्या रख सकता है। सभी विद्यार्थियों की समस्याओं का प्राचार्य को समाधान देना

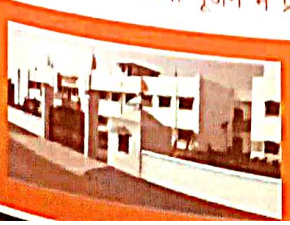

होता है। तत्पश्चात् संकल्प सत्र में छात्र कोई तीन संकल्प लेते हैं।

पुरातन छात्र-परिषद् :

वर्ष में दो बार (२ अक्टूबर एवं २६ जनवरी) पुरातन छात्र-परिषद् की बैठक सम्पन्न हुई।

कर्मचारी संघ गठन :

इस वर्ष प्रथम बार कर्मचारी संघ का गठन किया गया।

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा :

महाविद्यालय में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा दिनांक ०२ फरवरी से २२ फरवरी तक डॉ० आर०एन० सिंह, परीक्षा प्रभारी के निर्देशन में सम्पन्न हुई। परीक्षा परिणाम २५ फरवरी, २०१२ को घोषित किया गया।

पुरातन छात्र–परिषद् बैठक

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा देते छात्र/छात्राएं

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर :

२४ एवं २५ फरवरी को राष्ट्रीय सेवा योजना का तीसरा एवं चौथा एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया।

समावर्तन संस्कार समारोह :

प्रतिवर्ष की भाँति अपनी शिक्षा पूरी कर महाविद्यालय से विदा ले रहे विद्यार्थियों के समार्वतन संस्कार समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहने हेतु दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष माननीय आशीष जी ने सहमति दी। अध्यक्ष के रूप में गोरक्षपीठ उत्तराधिकारी, सदर सांसद एवं महाविद्यालय के प्रबन्धक पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा वतौर विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति प्रो. यू.पी. सिंह जी की उपस्थिति होगी।

कार्यशाला :

महाविद्यालय के शिक्षकों के अकादमिक विकास हेतु ४-५ मार्च २०१२ को "सामाजिक मानविकी विषयों की वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता एवं शोध-प्रविधि" विषय पर कार्यशाला आयोजित है। जिसमें प्रो. शिवाजी सिंह (गोरखपुर), डॉ० शंकर शरण (नई दिल्ली), प्रो. रामेश्वर मिश्र (भोपाल), प्रो. कुसुमलता केडिया (वाराणसी), डॉ० अमित कुमार द्विवेदी (अहमदाबाद), डॉ० हर्ष कुमार (गोरखपुर), डॉ० हिमांशु चतुर्वेदी (गोरखपुर) विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित होंगे।

विश्वविद्यालसय परीक्षा १६ मार्च से प्रस्तावित।

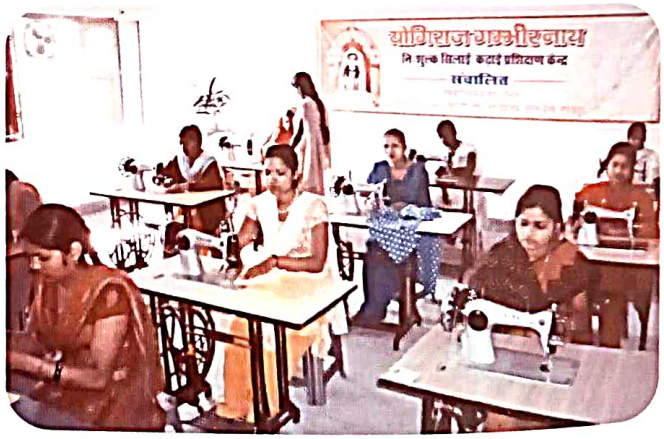

निःशुल्क सिलाई–कढाई सीखती महिलाएं

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष	श्री महन्त अवेद्यनाथ, गोरक्षपीठाधीश्वर
उपाध्यक्ष	प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति
प्रबन्धक/सचिव	श्री योगी आदित्यनाथ, सांसद लोकसभा
सदस्य	श्री प्रमोद चौधरी, प्रतिष्ठित व्यवसायी
	श्री धर्मेन्द्रनाथ वर्मा, अधिवक्ता
	श्री पारसनाथ मिश्रा, अधिवक्ता
	श्री प्यारे मोहन सरकार, अधिवक्ता
	श्री गोरक्ष प्रताप सिंह, शिक्षाविद्
	श्री योगी कमलनाथ, धर्माचार्य
	डॉ. मयाशंकर सिंह, प्राचार्य
	श्री रामजन्म सिंह, प्रधानाचार्य

शिक्षक-अभिभावक समिति

अध्यक्ष	श्री त्रियुगी नारायण मिश्र (अभिभावक)
उपाध्यक्ष	श्री विजय कुमार साहनी (अभिभावक)
	श्री महेश कुमार (अभिभावक)
सचिव	डॉ. आरती सिंह (शिक्षक)
सदस्य	श्री अजय प्रताप मौर्य (अभिभावक)
	श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह (अभिभावक)
	सुश्री अनामिका यादव (अभिभावक)
	श्री गोपाल कुमार वर्मा (अभिभावक)
	श्री डी.के. त्रिपाठी (अभिभावक)
	सुश्री छाया कुमारी (अभिभावक)
	श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव (अभिभावक)
	श्री संदीप पाण्डेय (अभिभावक)

शिक्षक संघ

अध्यक्ष	डॉ. विजय कुमार चौधरी
उपाध्यक्ष	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
महामंत्री	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी
कोषाध्यक्ष	डॉ. राजेश शुक्ला
सदस्य	श्रीमती कविता मन्ध्यान
	श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय
	श्री सुभाष गुप्ता
	श्री अनिल कुमार वर्मा
	डॉ. कमलेश सिंह यादव

कर्मचारी संघ

अध्यक्ष	श्री संजय कुमार शर्मा
उपाध्यक्ष	श्री झब्बर शर्मा
महामंत्री	श्री सुभाष कुमार
कोषाध्यक्ष	श्री लक्ष्मीकान्त दूबे
सदस्य	श्री प्रदीप कुमार यादव
	श्री ओमप्रकाश
	श्री रामरतन

छात्रसंघ

प्रभारी	श्री पुरूषोतम पाण्डेय	प्रवक्ता
अध्यक्ष	श्री विश्वजीत शर्मा	बी.ए. भाग-तीन
उपाध्यक्ष	श्री राकेश सिंह	बी.काम. भाग-तीन
महामंत्री	श्री राकेश कुमार मौर्य	बी.ए. भाग-तीन

छात्रसंघ के प्रतिनिधि

सुश्री प्रतिमा प्रजापति	बी.ए. भाग- एक	समाजशास्त्र
श्री राजेशिवा मौर्य	बी.ए. भाग- एक	भूगोल
सुश्री मयंकाराज गौड़	बी.ए. भाग- एक	मनोविज्ञान
श्री पुष्पेन्द्र कुमार	बी.ए. भाग- एक	राजा अध्ययन
सुश्री कृति पाण्डेय	बी.ए. भाग- एक	प्राचीन इतिहास
सुश्री धनशीला चौधरी	बी.ए. भाग- एक	इतिहास
श्री मनु कुमार सैनी	बी.ए. भाग- एक	अंग्रेजी
सुश्री रेनू मिश्र	बी.ए. भाग- एक	राजनीतिशास्त्र
श्री रिक्कू चौहान	बी.ए. भाग- एक	हिन्दी
श्री वशिष्ठ मुनि चौरसिया	बी.ए. भाग- एक	अर्थशास्त्र
श्री संतोष कुमार भास्कर	बी. ए. भाग-दो	समाजशास्त्र
सुश्री पूनम साहनी	बी. ए. भाग-दो	भूगोल
श्री राकेश सिंह	बी. ए. भाग-दो	प्राचीन इतिहास
सुश्री अर्चना भारती	बी. ए. भाग-दो	अंग्रेजी
श्री मोहन कुमार साहनी	बी. ए. भाग-दो	राजनीतिशास्त्र
श्री मोहन यादव	बी. ए. भाग-दो	अर्थशास्त्र
सुश्री रूप्पा चौहान	बी. ए. भाग-दो	हिन्दी
श्री अशोक कुमार मांझी	बी. ए. भाग-तीन	समाजशास्त्र
सुश्री मीरा	बी. ए. भाग-तीन	प्राचीन इतिहास
श्री राहुल सिंह	बी. ए. भाग-तीन	अंग्रेजी
श्री रामकृष्ण मिश्र	बी. ए. भाग-तीन	अर्थशास्त्र
सुश्री सुमन कुमारी	बी. ए. भाग-तीन	हिन्दी
श्री मंजेश कुमार	बी.एस-सी. भाग-एक	भौतिक विज्ञान
श्री भानु प्रताप चौहान	बी.एस-सी. भाग-एक	गणित
श्री सुधीर कुमार चौरासिया	बी.एस-सी. भाग-एक	रसायनशास्त्र
सुश्री शारदा	बी.एस-सी. भाग-एक	प्राणि विज्ञान
सुश्री सुनीता चौहान	बी.एस-सी. भाग-एक	वनस्पति विज्ञान
श्री विजय कुमार गौड़	बी.एस-सी. भाग-एक	इलेक्ट्रानिक्स
सुश्री अनामिका यादव	बी.एस-सी. भाग-एक	कम्प्यूटर साइंस
श्री आदित्य कुमार	बी.एस-सी. भाग-एक	सांख्यिकी
श्री अवनीश पाण्डेय	बी.एस-सी. भाग-दो	भौतिक विज्ञान
श्री सुनील कुमार	बी.एस-सी. भाग-दो	गणित
श्री रोहित त्रिपाठी	बी.एस-सी. भाग-दो	रसायनशास्त्र
सुश्री नीलम चौहान	बी.एस-सी. भाग-दो	प्राणि विज्ञान
सुश्री स्नेहलता चौहान	बी.एस-सी. भाग-दो	वनस्पति विज्ञान
श्री सत्यवान चौरसिया	बी.एस-सी. भाग-तीन	भौतिकी
श्री सतीश गौड़	बी.एस-सी. भाग-तीन	गणित
श्री पवन कुमार गुप्ता	बी.एस-सी. भाग-तीन	रसायन विज्ञान
सुश्री सविता प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-तीन	प्राणि विज्ञान
सुश्री शर्मिला निषाद	बी.एस-सी. भाग-तीन	वनस्पति विज्ञान
श्री संतोष कुमार प्रजापति	बी.काम. भाग-एक ग्रुप-ए	वाणिज्य
श्री संजीव कुमार	बी.काम. भाग-एक ग्रुप-बी	वाणिज्य
श्री राजेश निषाद	बी.काम. भाग-एक ग्रुप-सी	वाणिज्य
श्री जयहिन्द यादव	बी.काम. भाग-दो ग्रुप-ए	वाणिज्य
श्री धीरेन्द्र प्रताप सिंह	बी.काम. भाग-दो ग्रुप-बी	वाणिज्य
श्री हरिद्वार प्रजापति	बी.काम. भाग-दो ग्रुप-डी	वाणिज्य
श्री नन्हें कुमार गुप्ता	बी.काम. भाग-तीन ग्रुप-ए	वाणिज्य
श्री रवि अग्रवाल	एम.एस.-सी.प्रथम सेमेस्टर	रसायनशास्त्र

छात्रसंघ पदाधिकारियों का शपथ-ग्रहण राज्य सरकार के अध्यादेश के कारण न हो सका।

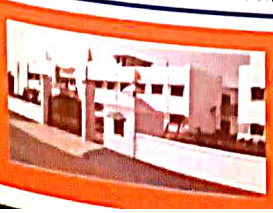

पुरातन छात्र परिषद्

प्रभारी	डॉ. सुनील कुमार मिश्र
अध्यक्ष	श्री नागेश राज पाण्डेय
उपाध्यक्ष	श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह
सचिव	श्री सचिन कुमार चौहान
सदस्य	श्री सुधांशु शुक्ला
	श्री शुभेन्दु कुमार श्रीवास्तव
	श्री राज पाण्डेय
	श्री अरविन्द कुमार शुक्ला
	श्री दीपक कुमार
	श्री महेश कुमार सैनी

छात्र नियन्ता मण्डल

श्री नन्हे कुमार गुप्ता	बी. काम. भाग तीन
श्री जयहिन्द यादव	बी.काम. भाग दो
श्री अवनीश कुमार पाण्डेय	बी. एस सी. भाग-दो
श्री वीरेन्द्र प्रताप सिंह	बी.काम. भाग दो
श्री मनु कुमार सैनी	बी.ए. भाग एक
श्री राजेश निषाद	बी.काम. भाग एक
श्री राहुल सिंह	बी.ए. भाग तीन
श्री रामकृष्ण मिश्र	बी.ए. भाग तीन
श्री विश्वजीत शर्मा	बी.ए. भाग तीन
श्री राकेश सिंह	बी. काम. भाग तीन
श्री राकेश कुमार मौर्य	बी.ए. भाग तीन

नियन्ता मण्डल

मुख्य नियन्ता	डॉ. विजय कुमार चौधरी
नियन्ता	श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय
	श्री लोकेश प्रजापति
	श्री विरेन्द्र तिवारी
	डॉ. शुभांशु शेखर सिंह
	श्री नन्दन शर्मा
	श्री अनिल कुमार वर्मा
	श्री संतोष कुमार
	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
	डॉ. राजेश शुक्ला
	श्री सुबोध मिश्र
	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
	श्री सुभाष गुप्ता
	डॉ. सुनील कुमार मिश्र
	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी
	श्री प्रकाश प्रियदर्शी

इस सत्र के रक्तदाता

१.	श्री दीपक कुमार	एम.एस-सी. प्रथम वर्ष
२.	श्री सुमित कुमार दूबे	बी.काम. भाग एक
३.	श्री सुधांशु रंजन त्रिपाठी	बी.काम. भाग-एक
४.	श्री आकाश वर्मा	बी.एस-सी. भाग तीन
५.	श्री रामेश्वर	बी.ए. भाग-एक
६.	श्री जयहिन्द यादव	बी.काम. भाग-तीन
७.	श्री हरेन्द्र सिंह	बी.काम. भाग-एक
८.	श्री सुधीर कुमार गुप्ता	बी.ए.भाग-तीन
९.	श्री अभिषेक जायसवाल	बी.काम. भाग-एक
१०.	श्री धीरज कुमार	बी.एस-सी. भाग-एक
११.	श्री नरेन्द्र ठाकुर	बी.ए. भाग-दो
१२.	श्री संजीव मिश्रा	बी.काम. भाग-दो
१३.	श्री अभिषेक राय	बी.एस-सी. भाग-दो
१४.	श्री आनन्द प्रकाश	बी.काम. भाग-दो
१५.	श्री सुभाष सिंह	बी.ए. भाग-दो
१६.	श्री कृष्ण कुमार प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-तीन
१७.	श्री आदित्य सिंह	बी.काम. भाग-एक
१८.	सुश्री अमृता गुप्ता	बी.काम. भाग-तीन
१९.	सुश्री अर्चना भारती	बी.ए. भाग-दो
२०.	सुश्री श्वेता सिंह	बी.ए. भाग-तीन
२१.	सुश्री अभिलाषा	बी.एस-सी. भाग-एक
२२.	सुश्री रोमा सिंह	बी.काम. भाग-एक
२३.	श्री राहुल सिह	बी.ए. भाग-तीन
२४.	श्री दीपक सिंह	बी.ए.भाग-तीन
२५.	श्री सचिन कुमार	पुरातन छात्र
२६.	श्री सूरज कुमार	पुरातन छात्र
२७.	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो
२८.	श्री नन्दन शर्मा	प्रवक्ता वाणिज्य विभाग
२९.	डॉ. राजेश शुक्ल	प्रभारी, वाणिज्य विभाग
३०.	श्री शिव प्रसाद शर्मा	पुस्तकालयाध्यक्ष
३१.	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य

प्रवेश समिति

संयोजक	डॉ. रघुबीर नारायण सिंह
सह संयोजक	डॉ. शिवकुमार बर्नवाल
	डॉ. शालिनी सिंह
	श्री नन्दन शर्मा
	डॉ. आरती सिंह
	श्री संतोष कुमार
	श्री सुभाष कुमार

चक्रानुक्रम में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों का सहयोग लिया जाता है।

प्रवेश परामर्श समिति

१. सुश्री रीवा सिंह	बी.ए. भाग-दो	६. सुश्री सविता प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-तीन
२. श्री शुभम् गौड़	बी.एस-सी. भाग-दो	७. सुश्री शर्मिला निषाद	बी.एस-सी. भाग-तीन
३. श्री सतीश गौड़	बी.एस-सी. भाग-तीन	८. श्री अमन कुमार वर्मा	बी.काम. भाग-तीन
४. श्री लवकुश कुमार प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-तीन	९. श्री राधेश्याम गुप्ता	बी.काम. भाग-तीन
५. श्री मनीष कुमार त्रिपाठी	बी.एस-सी. भाग-तीन	१०. श्री अखिलेश तिवारी	बी.काम. भाग-तीन

प्रवेश समिति में उन छात्र-छात्राओं को चयनित किया जाता है जो विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में अपने वर्ग में सर्वोच्च अंक प्राप्त करते हैं।

समावर्तन

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

प्रयोगशाला समिति

प्रभारी	डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी	प्राध्यापक
सदस्य	श्री रोहित त्रिपाठी	बी.एस-सी. भाग-दो
	सुश्री पूनम साहनी	बी.एस-सी. भाग-दो
	सुश्री सविता प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-तीन
	श्री सत्यवान चौरसिया	बी.एस-सी. भाग-तीन
	श्री मंजेश कुमार	बी.एस-सी. भाग-एक

छात्रा समिति

प्रभारी	श्रीमती कविता मन्ध्यान	प्राध्यापक
सदस्य	सुश्री कृति पाण्डेय	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री मीरा	बी.ए. भाग-तीन
	सुश्री रेनू मिश्रा	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री धनशीला चौधरी	बी.ए. भाग-एक

प्रार्थना एवं स्वच्छता समिति

प्रभारी	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य
	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	प्राध्यापक
सदस्य	सुश्री सुनीता चौहान	बी.एस-सी. भाग-एक
	सुश्री प्रतिमा प्रजापति	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री रेनू चौहान	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री शारदा	बी.एस.सी. भाग-एक
	श्री राकेश कुमार मौर्य	बी.ए. भाग-तीन
	श्री विक्की वर्मा	बी.ए. भाग-एक

क्रीड़ा समिति

प्रभारी	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही	प्राध्यापक
	श्री नन्दन शर्मा	प्राध्यापक
	श्री संजय कुमार शर्मा	प्रभारी कम्प्यूटर प्रकोष्ठ
सदस्य	श्री सतीश गौड़	बी.एस-सी. भाग-तीन
	श्री पवन कुमार गुप्ता	बी.एस-सी. भाग-तीन
	श्री संतोष कुमार	बी.काम. भाग-एक
	श्री पुष्पेन्द्र कुमार	बी.ए. भाग-एक
	श्री भानु प्रताप चौहान	बी.एस-सी. भाग-एक
	श्री सुनील कुमार मोदनवाल	बी.ए. भाग-दो
	श्री राकेश सिंह	बी.काम. भाग-तीन
	श्री सुधीर कुमार गुप्ता	बी.ए. भाग-तीन

पुस्तकालय तथा सूचना एवं परामर्श समिति

प्रभारी	श्री संतोष कुमार	प्राध्यापक
	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	प्राध्यापक
सदस्य	सुश्री अनामिका यादव	बी.एस-सी. भाग-एक
	सुश्री स्नेहलता चौहान	बी.एस-सी. भाग-दो
	श्री वशिष्ठ मुनि चौरसिया	बी.ए. भाग-एक
	श्री राजेशिवा मौर्य	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री शर्मिला निषाद	बी.एस-सी. भाग-तीन
	श्री हरिद्वार प्रजापति	बी.काम. भाग-दो
	श्री अशोक कुमार मांझी	बी.ए. भाग-तीन

बागवानी समिति

प्रभारी	श्रीमती कविता मन्ध्यान	प्राध्यापक
सदस्य	श्री आदित्य कुमार	बी.एस-सी. भाग-एक
	श्री संतोष भास्कर	बी.ए. भाग-दो
	श्री मोहन यादव	बी.ए. भाग-दो
	श्री सुधीर कुमार चौरसिया	बी.एस.-सी. भाग-एक
	श्री राकेश सिंह	बी.ए. भाग-दो
	श्री मोहन कुमार साहनी	बी.ए. भाग-दो

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

प्रभारी	डॉ. शालिनी सिंह	प्राध्यापक
	सुश्री मनीता सिंह	प्राध्यापक
सदस्य	सुश्री रूप्पा चौहान	बी.ए. भाग-दो
	सुश्री अर्चना भारती	बी.ए. भाग- दो
	सुश्री मयंकाराज गौड़	बी. ए. भाग- एक
	सुश्री नीलम चौहान	बी. एस.-सी. भाग-दो
	सुश्री सुमन कुमारी	बी.ए. भाग-तीन
	श्री देवाशीष शुक्ला	बी.ए. भाग-एक

आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ

अध्यक्ष	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य
सदस्य/वाह्य विशेषज्ञ	प्रो. यू.पी. सिंह	पूर्व कूलपति
	प्रो. रामअचल सिंह	पूर्व कूलपति
सदस्य प्राध्यापक	डा. विजय चौधरी	मुख्य नियन्ता
	डा. आर.एन. सिंह	प्रभारी प्राणि विज्ञान
	डा. शिव कुमार बर्नवाल	प्रभारी रसायन शास्त्र
	डा. शालिनी सिंह	प्रवक्ता रसायन शास्त्र
	डा. अविनाश प्रताप सिंह	प्रभारी राजनीतिशास्त्र
समन्वयक/सचिव	डा. अभय कुमार श्री०	प्रभारी वनस्पति विज्ञान

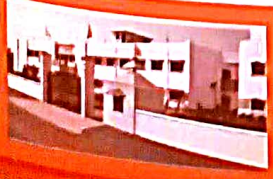

समावर्तन

महाविद्यालय परिवार

अध्यक्ष

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

प्रबन्धक

पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

प्राचार्य

डॉ. प्रदीप कुमार राव

डॉ. विजय कुमार चौधरी	प्रभारी	भूगोल विभाग, मुख्य नियन्ता
डॉ. रघुबीर नारायण सिंह	प्रभारी	प्राणि विज्ञान विभाग, संयोजक प्रवेश एवं परीक्षा
डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी	प्रभारी	वनस्पति विज्ञान विभाग, प्रभारी, प्रयोगशाला
डॉ. शिवकुमार वर्नवाल	प्रभारी	रसायन शास्त्र विभाग, प्रभारी कार्यालय
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	प्रभारी	राजनीतिशास्त्र विभाग, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो,
डॉ. शालिनी सिंह	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग, प्रभारी सांस्कृतिक विभाग
श्री लोकेश कुमार प्रजापति	प्रभारी	प्राचीन इतिहास, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
श्रीमती कविता मन्ध्यान	प्रभारी	अंग्रेजी विभाग, बागवानी एवं सिलाई-कढ़ाई
श्री पुरुषोत्तम पाण्डेय	प्रभारी	अर्थशास्त्र विभाग, प्रभारी छात्रसंघ
श्री संतोष कुमार	प्रभारी	भौतिक विज्ञान विभाग, पुस्तकालय तथा सूचना एवं परामर्श
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता	वनस्पति विज्ञान विभाग, नैक
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार	प्रवक्ता	भूगोल विभाग, प्रभारी क्रीड़ा
श्री प्रकाश प्रियदर्शी	प्रभारी	समाजशास्त्र विभाग, प्रभारी कला संकाय
डॉ. राजेश शुक्ला	प्रभारी	वाणिज्य संकाय, सूचना एवं जनसम्पर्क
श्री सत्यप्रकाश सिंह	प्रवक्ता	प्राणि विज्ञान विभाग
डॉ. आरती सिंह	प्रभारी	हिन्दी विभाग, सचिव, शिक्षक एवं अभिभावक संघ
श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	प्रभारी	गणित विभाग, सूचना एवं परामर्श, प्रभारी विज्ञान संकाय
श्री नन्दन शर्मा	प्रवक्ता	वाणिज्य संकाय, क्रीड़ा
श्री सुभाष गुप्ता	प्रवक्ता	वाणिज्य संकाय, प्रभारी वाणिज्य संकाय
डॉ. मनीषा कपूर	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग
डॉ. राजेन्द्र तिवारी	प्रभारी	सांख्यिकी विभाग
डॉ. वी.वी. मिश्र	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग
डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	प्रभारी	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, प्रार्थना एवं स्वच्छता
श्री अनिल कुमार वर्मा	प्रभारी	इलेक्ट्रानिक विभाग
सुश्री मनीता सिंह	प्रवक्ता	भौतिक विज्ञान विभाग, सांस्कृतिक कार्यक्रम
श्री सुबोध मिश्र	प्रवक्ता	प्राचीन इतिहास विभाग
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	प्रभारी	इतिहास विभाग, छात्र-कल्याण
डॉ. सुनील कुमार मिश्र	प्रभारी	मनोविज्ञान विभाग, पुरातन छात्र-परिषद्
डॉ. राम सहाय	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग, कार्यालय
डॉ. विरेन्द्र तिवारी	प्रभारी	कम्प्यूटर साइंस विभाग
डॉ. कमलेश सिंह यादव	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग
श्री आकाश पाण्डेय	प्रवक्ता	गणित विभाग
सुश्री पूनम	प्रवक्ता	समाजशास्त्र विभाग
सुश्री आम्रपाली	प्रवक्ता	वनस्पति विज्ञान विभाग

ग्रन्थालयी

श्री शिव प्रसाद शर्मा

तृतीय श्रेणी कर्मचारी

श्री सुभाष कुमार, कार्यालय प्रमुख

श्री लक्ष्मीकान्त दूबे, कार्यालय सहायक

श्री संजय कुमार शर्मा, प्रभारी कम्प्यूटर प्रकोष्ठ, क्रीड़ा सहायक

श्री प्रदीप यादव, प्रयोगशाला सहायक, वनस्पति विज्ञान विभाग

श्री ओम प्रकाश, प्रयोगशाला सहायक, भूगोल विभाग

श्री संतोष श्रीवास्तव, प्रयोगशाला सहायक, भौतिक विज्ञान

श्री राम उमेश साहनी, प्रयोगशाला सहायक, प्राणि विज्ञान विभाग

श्री उमेश कुमार, प्रयोगशाला सहायक, मनोविज्ञान विभाग

श्री झब्बर शर्मा, पुस्तकालय सहायक

श्री अमित कुमार, प्रयोगशाला सहायक, कम्प्यूटर विभाग

श्री महेश कुमार, प्रयोगशाला सहायक, रसायन शास्त्र विभाग

श्री शारदा नन्द पाण्डेय, संगणक संचालक

चतुर्थ श्रेणी

श्री रामरतन	परिचर
श्री विश्वनाथ	परिचर
श्री जोगिन्दर	परिचर
श्री लालसा	माली
श्री सोखा	चौकीदार
श्रीमती गुड्डी	परिचर
श्रीमती कमलावती	परिचर

हमारे प्रयास

- प्रातः सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, वन्देमातरम् एवं राष्ट्रगान के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ।
- 16 जुलाई से स्नातक/ स्नातकोत्तर द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 1 अगस्त से स्नातक/ स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- प्रति वर्ष पाठ्यक्रम योजना का प्रकाशन एवं तद्नुरूप 30 जनवरी तक पाठ्यक्रम पूर्ण करने की योजना का क्रियान्वयन।
- 16 अगस्त से प्रयोगशालाएं शुरू।
- छात्रसंघ का चुनाव सितम्बर प्रथम सप्ताह।
- प्रवेश समिति में छात्र-छात्राएँ सदस्य एवं संयोजक।
- छात्र, छात्राओं, प्राध्यापक, कर्मचारी आदि द्वारा प्रत्येक सोमवार को स्वैच्छिक श्रमदान।
- सप्ताह में एक दिन छात्र-छात्राओं द्वारा कक्षाध्यापन।
- छात्र-छा
- महाविद्य ल, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल, सांस्कृति
- प्रत्येक सं
- छात्र-छा त्र द्वारा।
- फरवरी म
- विश्वविद स्तकालय की विशेष सुविधा, प्रवेश समिति व ोकनार्थ रखा जाना।
- परीक्षा से न।
- शिक्षकों
- सत्र में दो
- प्रतिवर्ष माला।
- नवम्बर म
- प्रतिवर्ष नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन।
- प्रत्येक सत्र में राष्ट्रीय संगोष्ठी/ कार्यशाला का आयोजन।
- ग्रामीण महिलाओं के स्वालम्बन हेतु बाबा गम्भीर नाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन।
- महाविद्यालय के समस्त छात्र/छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं हेतु निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण।

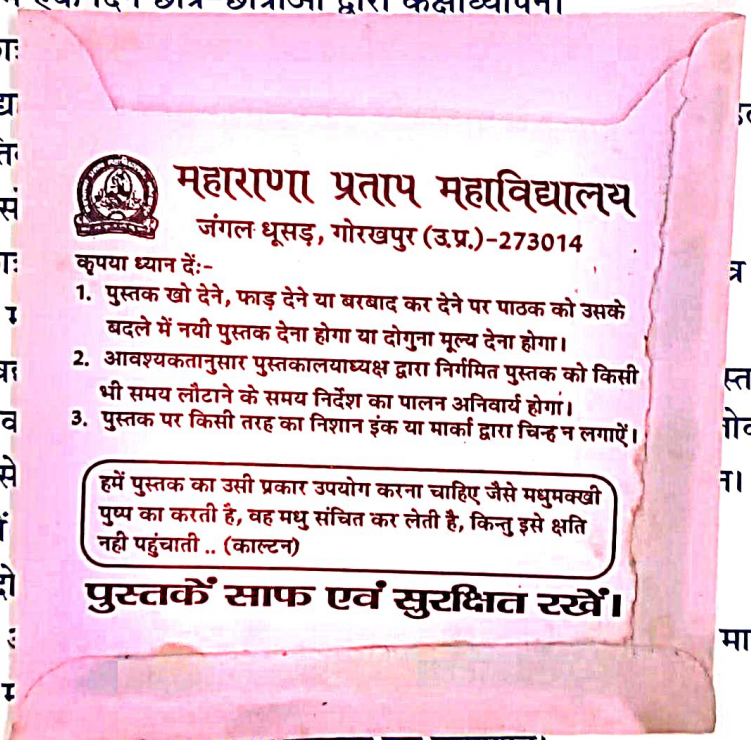

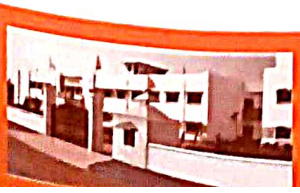

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

समावर्तन उपदेश

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत [illegible] त्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रव [illegible] भ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। [illegible] देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

तैत्तिरीय [illegible] 1.11

"सत्य बोलना। धर्म का आचरण करना। स्वाध्याय में प्रमाद न करना। आचार्य की दक्षिणा [illegible] ने पर सन्तति-उत्पादन की परम्परा विच्छिन्न न करना। सत्य से न हटना। धर्म से न हटना । लाभ कार्य मे [illegible] द न करना। महान् बनने के सुअवसर से न चूकना। पठन-पाठन के कर्त्तव्य में प्रमाद न करना। देवता और पितरों के कार्य (यज्ञ और श्राद्ध आदि) से प्रमाद न करना। माता को देवी समझना। पिता को देवता समझना। आचार्य को देवता समझना। अतिथि को देवता समझना। अन्यान्य दोष-रहित कार्यों को करना।"

संकल्प

मैं .... पुत्र/पुत्री श्री/श्रीमती ....

स्नातक/स्नातकोत्तर कला/विज्ञान/वाणिज्य में इस महाविद्यालय से अपनी शिक्षा पूर्ण कर रहा/रही हूँ।

- मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि उपर्युक्त समावर्तन उपदेश का पालन करूँगा/करूँगी।
- जीवन में शुचिता एवं ईमानदारी के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करूँगा/करूँगी।
- मैं भारत का एक योग्य नागरिक बना रहूँगा/बनी रहूँगी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति मेरी निष्ठा रहेगी।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे राष्ट्रीय एकता-अखण्डता को चोट पहुँचे।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे मेरे माता-पिता तथा सगे-सम्बन्धियों की कीर्ति धूमिल हो।
- भारत की सनातन संस्कृति में मेरी अटूट निष्ठा बनी रहेगी।
- भारतीय जीवन मूल्यों का सम्मान करते हुए उसके संवर्धन हेतु सदैव प्रयत्नशील रहूँगा/रहूँगी और अपने व्यक्तिगत जीवन में उनका पालन करूँगा/करूँगी।

हस्ताक्षर प्राचार्य

हस्ताक्षर छात्र/छात्रा